# TIJER - INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL
## TIJER.ORG | ISSN : 2349-9249
*An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal*


Certificate of Publication

The Board of

TIJER - International Research Journal

Is hereby awarding this certificate to

## Dr.anjana rani

In recognition of the publication of the paper entitled

**Hariyana ke loksangeet me nihit lokgeto ka adhayan**

Published in Volume 10 Issue 5, May-2023

*Co-Authors -*

**Paper ID - TIJER2305132**

ISSN 2349-9249 TIJER
Technix International Journal for Engineering Research (TIJER)

**Editor-In Chief**


TIJER | ISSN : 2349-9249

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Monthly, Indexing in all Major Database & Metadata, Citation Generator

**TIJER - INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL**

*An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal*

**Website: www.tijer.org | Email: editor@tijer.org | ESTD: 2014**

Manage By: IJPUBLICATION Website: www.tijer.org | Email ID: editor@tijer.org

# हरियाणा के लोकसंगीत में नीहित लोकगीतों का अध्ययन

**डा0 अंजना रानी**
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन
राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल

लोक हमारे जीवन का महासमुद्र हैं उसमे भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ सचित रहता है। कतिपय विद्वानों के अनुसार लोक शब्द सस्कृत के लोक दर्शन धातु में घन प्रत्यय लगने से निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ है – देखना। लट–लकार के अन्य पुरुष, एक वचन में इसका रूप होता है– लोकते ! अतः लोक का अर्थ हुआ – देखने वाला। वह समस्त जन समुदाय जो इस क्रिया को करता है लोक के अन्तर्गत समाविष्ट है। अतः लोक का शाब्दिक अर्थ है – जन साधारण अर्थात् वह जन समुदाय जो ग्रामीण आंचल में निवास करता है।

लोक शब्द का प्रयोग नया नहीं है, फिर भी इस शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विदेशी तथा भारतीय विद्वानों में मतभेद हैं। इस शब्द का प्रयोग ऋग्वेद से ही मिलने लगता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में इसका अर्थ दो प्रकार से ''दिव्य तथा पार्थिव'' है। हिन्दी काव्य में लोक शब्द के कुछ प्रयोग पाए जाते हैं – जैसे सूर के पदो में – नंदन के नेह–मेह जिन लोक – लोक– लीपो।

2. लोक वेद प्रोतहार पहरूआ तिन्हूं पै राख्यो, न परथो री।
तुलसी की रचना में 1. लोक की वेद बड़ेरो।
2. सो जानव सत्संग प्रभाऊ लोकहु वेद न जान उपाऊ।।

इन पंक्तियों में लोक शब्द वेद से भी भिन्न स्थिति में प्रकट हुआ है परंतु जिस अर्थ में लोकशब्द को गौरवपूर्ण पद प्राप्त हुआ ही वह आधुनिक है।[2]
यजुर्वेद में लोक की कल्पना विराट रुप में की गई है। लोक, पुरुष रूप ईश्वर है। उसके सहस्त्रों मुख, नेत्र और पद हैं –

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्र पात ।''

लोक नामी यही विराट पुरुष अनेक रूपों में इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त है।

अतः इन सभी उदाहरणों से यही सिद्ध होता है कि लोक में समस्त सृष्टि निहित है। वह किसी विशिष्ट वर्ग अथवा जाति का सूचक शब्द नहीं है, बल्कि अपने आप में समस्त संस्कृति का प्रतिनिधित्व समाहित किए हुए है। अतः लोक

शब्द में ग्रामीण एवं नागरिक मानस का सुन्दर समन्वय हुआ है। यही हमारी सभ्यता संस्कृति का इतिहास है।[3]

लोक संगीत

लोक संगीत का अर्थ जनसाधारण या विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों मे प्रचलित संगीत से है यह जनसाधारण का इतिहास है जिसमे भारतीय संगीत का सच्चा दर्शन मिलता है। पं0 ओंकारनाथ ठाकुर के अनुसार देशी संगीत के विकास की पृष्ठभूमि, लोक संगीत है। परम्परानुसार स्थानीय भाषाओं में होने वाले गीत नृत्य आदि लोक संगीत कहलाते हैं।[4]

लोक संगीत का उद्भव कब हुआ, तथा कैसे हुआ, इसकी प्राचीनता के संबंध में अनुमान लगाना न केवल कठिन है, अपितु असंभव भी है। लोक संगीत का इतिहास इतना प्राचीन है जितना मानव सृष्टि का। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव सृष्टि रचना के साथ लोक संगीत का उद्भव भी हुआ होगा। प्रकृति ही लोक संगीत की जननी है। मानव मन ने रोना व गाना, स्वयं ही सीख लिया था. रोने तथा गाने में सुख दुख की भावना निहित रहती है। इन दोनों भावों में किसी न किसी रूप में संगीत विद्यमान रहता है। अतः मनुष्य ने अपने भावों को व्यक्त करने का माध्यम, सर्वप्रथम संगीत को ही बनाया होगा, ऐसा अनुमानित हैं।[5]

भारत में प्रत्येक प्रांत अपने लोक संगीत से ओत प्रोत है। किसी भी प्रदेश की संस्कृति का चित्र, उस प्रदेश में प्रचलित लोक संगीत में प्रयाप्त मात्रा में देखा जा सकता है। लोक संगीत जनसाधारण की सुख दुख की अनुभूतियों का सुंदर समन्वय और हृदय में स्थित भावनाओं की अभिव्यक्ति का सरलतम माध्यम है।[6]

आज लोक संगीत का जो विकसित स्वरूप हमारे समझ है उसमें मानवता की समस्त अनुभूतियों का संचय है! यह संगीत, किसी एक व्यक्ति द्वारा निर्मित नहीं हुआ और न ही एक समय में बना। इसका विकास युग–युगान्तर में निरापद गति से बढ़ती हुई इसकी धारा तथा इसमें अनेक व्यक्तियों की अनुभूतियों का समावेश होने के परिणामस्वरूप हुआ है। वास्तव में लोक रुची ही लोक संगीत की जननी है। क्योंकि लोक रूची, लोक व्यवहार तथा लोक अनुभवों द्वारा ही इसका यर्थाथ स्वररूप प्रकट होता है। लोकरुची के द्वारा ही बार–2 इसके स्वरूप में परिवर्तन होते रहते हैं।[7]

हरियाणा का लोक संगीत एवं उसमे नीहित लोकगीत,

हरियाणा प्रदेश, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सम्पन्नता की दृष्टि से सदैव परिपूर्ण रहा है। वेदों से लेकर पुराणों तक, महाभारत से लेकर कादंबरी तक ग्रंथों की रचना इसी प्रदेश में हुई है। अनेक तीर्थ स्थल जो इस प्रदेश में है प्रयटकों के आकर्षण का केंद्र है। यदि लोक संगीत की बात की जाए तो लोक संगीत का लोगों के जीवन के साथ गहरा संबंध है। अगर लोक संगीत को लोगों के दैनिक जीवन से पृथक कर दिया जाए तो लोगों का जीवन नीरस हो जाएगा। लोक संगीत को अगर यहां के जन–जीवन का प्राण कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

हरियाणा में लोक गीतों का प्रयोग, मनोरंजन के लिए ही नहीं, अपितु तीज–त्यौहारों एवं संस्कारों आदि के समय परम्परागत रूप से अनिवार्य समझा जाता है।[8]

हरियाणा प्रदेश के लोकसंगीत मे सौंदर्यप्रेरक सभी तत्व विद्यमान हैं। इसमें लयमूलक सौंदर्य, नादात्मक सौंदर्य, तथा स्वर के सही लगाव के साथ–2 भावपक्ष और कलापक्ष का भी सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है ! अतः यह कहा जा सकता है कि हरियाणा प्रदेश के लोक संगीत में सौंदर्य, स्थूल भी है, सूक्ष्म भी, प्रत्यक्ष और प्रोक्ष भी है।[9]

हरियाणवी लोक गीतों को दो भागों में बांटा जा सकता है – स्त्रीगेय लोक गीत, पुरुष गेय लोक गीत।

पुरुष गेय लोक गीत, ऐतिहासिक किस्सों और कथाओं पर आध आधारित होते है। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि पुरुष गेय लोक गीतों का त्यौहारों और संस्कारों आदि से कोई संबंध नहीं है, अपितु कुछ विशेष अवसरों पर पुरुष भी उसी उल्लास के साथ लोकगीतों की मधुर धुनों का गायन करते हैं जितना की स्त्रियां लेकिन स्त्री गेय लोकगीतों की तुलना में पुरुष गेय लोक गीतों का महत्व, त्यौहारों– संस्कारों आदि में बहुत कम होता है।[10]

डा0 सत्या गुप्ता के कथानुसार लोकगीतों से व्यवहारिक आवश्यकताओं की भी पूर्ती होती है जैसे– काम के बोझ को हल्का करना, मन की शांति के लिए, सामान्य जनता के मनोरंजन के लिए, मन की प्रसन्ता, को संगीत द्वारा व्यक्त करना इत्यादि ।

चकले में राछ घलादे जी चकले में,
पीसैगा मोटा तो मारूंगी सोटा....

मेरे सिर पै बंटा टोकणी
मेरे हाथ में नेजू डोल
मैं पतली सी कामणी।

मै तो काली होगी माडी होगी राम
यो के धंदा घर का।
इन गीतों में स्त्री के सामान्य जीवन की झलक साफ दिखाई पड़ती है!

स्त्रीगेय गीतों मे ऋतु गीत, तीज त्यौहार गीत व संस्कार गीत प्रमुख हैं। वैसे तो 16 संस्कार माने गए हैं परंतु हरियाणा में जन्म विवाह और मृत्यु, संस्कार प्रमुख माने जाते हैं। स्त्री के गर्भवती होने से लेकर पुत्र जन्म तक अनेक संस्कार किये जाते हैं।[12]

म्हारे आंगण बाज्या बाजियो जी म्हारा राज।
मैं तैं नित्त उठ लिप्पां आंगणों,
किस मोस्सर लिप्पां पिछली पछीत,
बंधावा म्हे सुण्यो जी म्हारा राज।

हरियाणा मे पुत्र जन्म पर ही गीत गाये जाते हैं। पुत्री–जन्म पर तो सभी को रुलाइयां आती है।[13]

हरियाणा के लोकगीतों की यह विशेषता है कि उनमे बनावट नहीं होती। अशिक्षित जनता के बीच स्वीकृति पा जाना ही इनकी सहजता का कारण हैं। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण ही लोकगीतों की धारा, परंपरा से आबद्ध होते हुए भी भूत वर्तमान और भविष्य को जोड़ते हुए, एक कड़ी के रूप में विद्यमान रहती है। हरियाणा के लोकगीतों का वर्गीकरण, सरल व्यवहारिक रूप से निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

1. सास्कृतिक गीत/संस्कार गीत
2  सावन के गीत
3. फागुन के गीत
4. बारहमासिया गीत
5. पर्वोत्सवों से संबंधित गीत
6. श्रृंगार रस से पूर्ण, विरह मिलन के गीत

7. एतिहासिक अथवा वीर रस से संबंधित गीत
8. भक्ति नीती समन्वित गीत
9. कृषि एवं दैनिक जीवन से संबंधित गीत
10 विविध गीत।[14]

हरियाणा लोक संगीत परंपरा के अन्तर्गत लोक गीतों को दो भागों में बांटा गया है – मुक्तक गीत तथा कथात्मक गीत ! मुक्तक गीतों के अन्तर्गत संस्कार गीत, सावन के गीत, कागुन के गीत, बारहमासिया गीत, पर्वोत्सवों से संबंधित गीत, श्रृंगार रस से पूर्ण विरह मिलन के गीत, कृषि एवं दैनिक जीवन से संबंधित गीत तथा विविध गीत सम्मलित हैं, जो विशेष अवसर के अनुकूल हैं। कथात्मक गीतों में ऐतिहासिक, वीर रस तथा भक्ति संबंधित गीत सम्मलित होते हैं। जिन्हें आल्हा एवं पवारा आदि नामों से जाना जाता है।[15]

मुक्तक गीतों के अन्तर्गत आने वाले हरियाणा के लोक गीतों का वर्णन इस प्रकार है

1. <u>सांस्कृतिक गीत</u>

संस्कारों से संस्कृति बनती है और हमारी संस्कृति में सोलह संस्कारों का उल्लेख है परंतु मुख्यतः जन्म संस्कार, विवाह संस्कार और मृत्यु संस्कार का ही निर्वाह किया जाता है। हरियाणा मे पुत्री जन्म पर कोई गीत नहीं गाया जाता जबकि पुत्र जन्म को हर्षोल्लास के साथ उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर सबसे पहले देवी – देवताओं की स्तुति के गीत गाए जाते हैं –

पांच पतासे पांनां का बिड़ला ले श्याम जी पैं जाइयो जी
जिस डाली म्हारे श्याम जी बैठे, वा डाली झुग जाइयो जी।

इसके बाद पुत्र जन्म से संबंधित गीत
पायां मैं पैजणियां लाला छुन्नक छुन्नक डोलैगा
दाद कहके बोलेगा दादा की गोदी खेलैगा।[16]

विवाह गीत – इस विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार के गीत हरियाणवी लोक संगीत में मिलते हैं जैसे सगाई के गीत, बारात के गीत, मेहंदी के गीत, घुड़चढ़ी के गीत, फेरों के गीत, विदाई के गीत इत्यादि। विदाई गीतों मे एक गीत प्रमुख है जैसे – ''यो ले बाबल घर आपणा, मैं तो चाली है सजन के देस रे।''

अन्तयेष्टी संस्कार – हरियाणा में किसी की मृत्यु होने पर 13 दिन तक शोक मनाया जाता है। असामयिक मौत पर विलाप के हृदयविदारक स्वर, श्रोताओं को करुणा विगलित कर देते हैं। यदि किसी वृद्ध सुख व सम्पन्न व्यक्ति की मृत्यु हो तो उसे जश्न की तरह बनाया जाता है।[17]

2. सावन के गीत

हरियाणा प्रदेश में सावन के समय कोथली के गीतों का भी प्रचलन है। अगर किसी कारण लड़की सावन में अपने ससुराल मे होती है तो उसके पीहर से कोयली भेजने की प्रथा है जिससे संबंधि गीत इस प्रकार है–

नीम्बां के निम्बोली लागी
सामाणियो कद आवैगा
मारियो री तो रूपो नाई,
कोथली कद लावैगा।

इसी तरह सावन के मौसम से संबंधित गीत है जैसे –

सामण आया हे मां मेरी मै सुण्या जी,
हांजी कोए आई है नवेली तीज।

सासड़ नै भेजी है मां मेरी चूंदड़ी जी,
एजी कोई रे भेजी सास, इन्द्र राजा नै झडी
ए लगा दई जी।[18]

3. फागुन के गीत

शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को होली दहन होता है। भक्त प्रहलाद और होलिका की कथा से संबंधित गीत भी इस समय में गाए जाते हैं। फागुन के गीतों को हरियाणा में फाग के गीत भी कहा जाता है।

फागण के दिन चार री सजनी, फागण के दिन चार
मध जोबन आया फागण मैं, फागण भी आया जोबण मैं।

जब साजन ही परदेस गये, मस्ताना फागण क्यूं आया
जब सारा फागण बीत गया तैं घर मै साजण क्यूं आया।[19]

4. बारहमासया गीत

इन गीतों में वर्ष भर के बारह महीनों का वर्णन होता है। इसी लिए इन्हें बारहमासिया गीत कहा जाता है। इनमें विशेष रूप से विरह भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है।

चैत में, री माँ लामणी हो,
बैसाखी केसरी रंग भरया जी,
साढ़ मे बरसें, री माँ मेरी राम जी
सावन मे री माँ मेरी आवैगी तीज।[20]

5. पर्वोत्सव से संबंधित गीत

हरियाणा मे पर्वों से संबंधित गीत तीज से शुरू होकर जन्माष्टमी, गूगा नवमी, सांझी पूजन, कार्तिक, होली इत्यादि तक चलते हैं।[21]

6. कृषि एवं दैनिक जीवन से संबंधित गीत

हरियाणा लोक जीवन का कोई भी कार्य लोक गीतों से अछूता नही हैं। परिश्रमी किसान के संघर्षमय जीवन मे भी श्रम की थकान के निवारण हेतु लोक गीतों का प्रमुख स्थान है । इन गीतो से मनोरंजन ही नहीं होता बल्कि कार्य करने की क्षमता में भी वृद्धि होती हैं। इन गीतों में फसलों का बौना गुडाई करना, पानी देना, फसल का पकना, काटना– काढ़ना इत्यादि विषय संबंधित होते है।

धरती माता नै हर्‌यो कर्‌यो
गऊ के जाये नै हर्‌यो कर्‌यो
ढाणा खेडै नै हर्‌यो कर्‌यो
गंगा माई नै हर्‌यो कर्‌यो .........[22]

7. विविध गीत

इन गीतों में अन्य गीत जैसे–चरखा कातने के गीत, पनघट के गीत, पालने के गीत–लोरियां, दिनचर्या से संबंधित गीत सम्मिलित होते हैं।

8. श्रृंगार रस से पूर्ण विरह मिलन के गीत

हरियाणवी लोक संगीत में स्त्री सज्जा से संबंधित केश विन्यास, सिंदूर, चूड़ियों, वस्त्र आभूषणों इत्यादि के गीत भी मिलते हैं। स्त्री के सोलह श्रृंगार प्रसाधनों की गणना की पुष्टी लोक गीतों में की जाती है। इन गीतों में स्त्री के संयोग वियोग पक्ष को भी भली प्रकार से वर्णित किया जाता है।[23]

**कथात्मक गीतों की श्रेणी में आने वाले गीत**

ऐतिहासिक तथा वीर रस से संबंधित गीत

वीर रस से युक्त गाथाएँ हरियाणा में अत्यंत लोकप्रिय हैं। अधिकांश वीर गाथाओं का संबंध भारत के मध्यकालीन इतिहास से है। इनमें आल्हा ऊदल, गुग्गा पीर भूरा बादल, अमरसिंह राठौर, वीर जवाहरमल, भाऊ की शाखा, किस्सा राव कृष्ण गोपाल, हरफूल जाट, इत्यादि से संबंधित वीर गाथाएँ मिलती है

होल्यां तै कुदै सुरमे माइयां के लाल,
लोहा बाजे कड़कड़ तलवार कटार।[24]

भक्ति नीति समन्वित गीत

भगवत प्रेम की प्राप्ति के लिए, मानसिक विकारों का शमन करके जो भजन गाए जाते है उसे भक्ति संगीत कहा जाता है। हरियाणा के लोक संगीत में जो भजन गाए जातें हैं वे सभी राम और कृष्ण की कथाओं से संबंधित होते हैं।

सत्संग में कैसे जाऊं, घर की दुबध मिटै कौन्या
हे मेरे बिछडे राम मिलै कोन्या

गोकुल गढ़ हैं रीवा चाली रे गुजरिया हो राम
वाहे गुजरिया मेरे मन मैं बसी।

राम और लक्ष्मण दसरथ के बेटे, दोनो
बणखंड जांए, हे जी कोए राम मिले भगवान।[25]

हरियाणा में इन सभी लोक गीतों के अतिरिक्त कुछ अन्य लोक गीत भी गाए जाते हैं जो निम्न प्रकार से हैं :–

1. होली राग व नगाड़ा वादन
2. लोक राग
3. सांग संगीत

## होली राग

गेये होने के कारण लोक संगीत में इन्हें राग की संज्ञा दी गई है। ये गीत होली से संबंधित होते हैं। इसके साथ नगाड़ा वादन करना, हरियाणा प्रदेश की बहुत ही महत्वपूर्ण परिपाटी है।

## लोक राग

लोक राग भी हरियाणा के लोक संगीत में प्रचलित है। इनके गाने की तकनीक, शास्त्रीय संगीत की तरह की जटिल नहीं हैं। लोक रागों को भावों की दृष्टि से चार भागो में बांटा गया है।
(1.) जोगी राग के अंतर्गत – पूर्ण भगत, ध्रुव भगत, हरफूल जाट की लोक कथाएं हैं। (2) भाट तथा डूम के अन्तर्गत – निहालदे, ढोला मारू, नरसी भात इत्यादि किस्से आते हैं।
(3) पेरना के अंतर्गत – रागिनी, देसी ठुमरी, टप्पा आदि हैं।
(4) भवानी के अंतर्गत – लीलावती की गाथा बताई गई है।[26]

## सांग संगीत

हरियाणा प्रदेश मे सांग की परंपरा लगभग ढाई सौ साल पुराना मानकर, किशन लाल भाट को (1730 से पूर्व) सांग का प्रथम प्रणेता अथवा सांगी माना जाता है। इसके बाद दीपचंद, हरदेवा, लखमीचंद तथा मांगेराम आदि प्रमुख सांगियों ने इस लोक परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना विशेष योगदान दिया।
यह एक नृत्य नाटिका है। जिसे ऐतिहासिक वीर गाथाओं राम कृष्ण, राजा हरिशचंद्र, सती अन्सूइया, इत्यादि के अतिरिक्त सामाजिक प्रसंगों, एवं श्रृंगारिक प्रसंगों को लोक नाटय के रूप में अभिनय, नृत्य, गायन–वादन के साथ प्रस्तुत किया जाता है।[27]

इस प्रकार उपरोक्त लोकगीतों के विवरण द्वारा यह कहा जा सकता है कि हरियाणा प्रांत के लोकगीतों की संख्या, यहां के लोकनृत्यों और वाद्यों की तुलना में अधिक है, और यदि सांग की बात की जाएँ तो सांग को लोकगीतों के अन्तर्गत रखना उचित नहीं है क्योंकि यह एक लोक नृत्य नाटिका है जिसकी स्वतंत्र प्रस्तुती एक नाटक के रूप में होती है।

# संदर्भ ग्रथं सूची


1. डा0 मुकेश, हरियाणा और पंजाब का लोकसंगीत – तुलनात्मक अध्ययन, पृ0 36
2 लक्ष्मी नारायण गर्ग, निबंध संगीत, पृ0 73–74
3 डा0 लोकेश शर्मा, स्वाती शर्मा, संगीत सरिता, पृ0 155
4 सीमा जौहरी, संगीतायन, पृ0 6
5 डा0 जयसिंह यादव, हरियाणा लोक संगीत एक अध्ययन, पृ0 38
6 प्रभु लाल गर्ग, लोकप्रिय और शास्त्रीय संगीत, संगीत लेख, पृ0 105
7 डा0 जयसिंह यादव, हरियाणा लोक संगीत एक अध्ययन, पृ0 38
8 डा0 मुकेश, हरियाणा और पंजाब का लोकसंगीत–तुलनात्मक अध्ययन, पृ 49
9. पुष्पा शर्मा, लोक गीतों में नाद सौंदर्य, पृ0 233
10 सुरेश चंद्र, हरियाणा का लोक संगीत एवं उसका वर्तमान स्वरूप (शोधनिबंध) पृ.51
11. डा0 सत्या गुप्ता, खडी बोली के लोक साहित्य, पृ0 29
12 डा0 मुकेश, हरि0 पं0 का लोक संगीत, तुलनात्मक अध्ययन, पृ0 52
13 रीता धनकर, हरियाणा का लोक संगीत, पृ0 42
14. वही पृ0 40–41
15 वही पृ0 29
16 डा0 भारती शर्मा, भारतीय संगीत के अन्य विषयक दृष्टिकोण, पृ0 97–98
17 वही पृ0 100
18 रीता धनकर, हरियाणा का लोक संगीत, पृ0 49–56
19 शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ0 248
20 डा0 मुकेश, हरि0 पं0 का लोक संगीत, तुलनात्मक अध्ययन, पृ0 118
21 रीता धनकर, हरियाणा या लोक संगीत, पृ0 67
22 वही पृ0 69
23 वही पृ0 67
24 वही पृ0 67
25 डा0 भारती शर्मा, भारतीय संगीत के अन्तः विषयक दृष्टिकोण, पृ0 105
26. रीता धनकर, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा, पृ0 98–99
27. वही पृ0 102